"पाबूजी की लोकगाथा"

GARG 3

पाबूजी :- राजस्थान वीरों की रणभूमि तथा वीरांगनाओं की जौहर भूमि है। यहाँ के वीर अपनी आन-बान-शान व लोकहित की रक्षा के लिए मर मिटते है तो यहाँ की नारियाँ अपने सतीत्व की रक्षा के लिए पति के साथ जलती चिता में सती हो जाती है। लोकमानस ऐसे शूरवीरों एवं वीरांगनाओं को उच्च स्थान देता है।

राजस्थानी वीर परम्परा माला के सुमेरूरत्न रणबंका राठौड़ पाबूजी का जन्म संवत् 1313 में मारवाड़ के कोलूगढ ग्राम में हुआ। कोलूगढ के राजा धांधल के बड़े पुत्र बूड़ोजी व छोटे पुत्र पाबूजी थे। बूड़ोजी के एक पुत्री 'केमलदे' थी। पाबूजी इस अपनी भतीजी से बहुत स्नेह करते थे। वे उसका विवाह किसी योग्य वर से करवाना चाहते थे। संयोग से एक बार उनकी भेंट गोगाजी चौहान से हुई। दोनों ने चमत्कार दिखाये। पाबूजी मेंढक बनकर पानी में पैठ गये तब गोगाजी ने सर्प रूप धारण कर उन्हें पानी से बाहर निकाला। शर्त हारने के अनुसार ~~केम~~ केलमदे का विवाह गोगाजी से करवाया दहेज में धन, हीरे, सोना, चांदी, हाथी, घोड़े दिये गये। पाबूजी ने ऊंट भी देने का वचन दिया। राजस्थान में ऊंट के अभाव के कारणवश ऊंट नहीं भेजे गये, जिससे सास, ननद आदि केलमदे को ताने मारने लगी। तानों से दुःखी होकर उसने काका पाबूजी को पत्र लिखा। पाबूजी व्याकुल होकर दरबार लगाया। सभा में हरिसिंह नामक वीर ने बीड़ा उठाया और साहस के साथ अपनी माँ व पत्नी से विदा लेने आया। तब माँ ने बहन के विवाह की बात कही- उसके हाथ पीले कौन करेगा? तथा कन्यादान कौन करेगा? तब माँ को आश्वस्त करते हुए वे कहते हैं - बूड़ोजी, पाबूजी, चांदा, डामा आदि यह कार्य पूर्ण कर देंगे। यह कहकर वह लंका चल पड़ा समुद्र किनारे पहुँचकर उसने गुरु बालीनाथ को याद किया

Scanned with CamScanner

जिससे समुद्र पर सेतु बन गया। वे सेतु पार कर लंका में पहुंच गया। जंगलों में ऊंटों के झुण्ड चर रहे थे। हरिसिंह ने साधु वेश बनाकर धूणी जगाई। ऊंटों के चरवाहे उसे साधु समझ कर दूध, फल आदि चढ़ावा देने लगे, किन्तु उन्होंने नहीं लिया। पाड़ितों ने उसके स्वरूप को पहचान लिया। भेद खुलने पर सभी लाठियाँ लेकर आए। तब हरिसिंह ने चमत्कार दिखाया और जलते अंगारे अपनी झोली में रख दिये जिससे उसको सिद्ध पुरुष मानकर स्वागत-सत्कार किया। कई हांड़ियां दूध जलने पर भी खप्पर खाली का खाली रह गया जिससे सभी आश्चर्यचकित रह गये। हरिसिंह केवल ऊंट की मींगनियाँ लेकर आ गया और पाबूजी को सारा वृतान्त सुना दिया।

पाबूजी केसर कालमी पर आरूढ़ हो दल-बल सहित लंका जा पहुंचे। वहाँ जाकर ऊंटों को छोड़ लिया। रावण को पाबूजी ने हरा दिया। वे ऊंटों को लेकर भतीजी के ससुराल की ओर चल पड़े। मार्ग में सोढ़ों का शुष्क वन पाबूजी के प्रवेश से हरा-भरा हो गया। वहीं सोढ़ों की पुत्री ने पाबूजी को देखा। उनके गुण श्रवण एवं दर्शन से उसने ठान लिया कि वह पाबूजी से विवाह करेगी, अन्यथा कुंवारी रहेगी। ऊंटों को भतीजी के ससुराल देकर वे चले गए

इधर राजकुमारी ने जोबी को कहा कि महाराज को समझाकर तुम स्वर्ण-नारियल कोलूगढ़ ले जाओ। पूर्णिमा को विवाह सुनिश्चित किया गया। पाबूजी ने पीले चावल देकर देवी-देवताओं, सगे-सम्बन्धियों और बहिन को बुलाया गया किन्तु बहनोई जायल खींची को नहीं बुलाया। चांदा को देवल चारणी के पास घोड़ी लाने हेतु भेजा। किन्तु उसने गोरक्षक घोड़ी को देने से मना कर दिया। तब चांदा ने कहा कि पाबूजी स्वयं तेरी व गायों की रक्षा करेंगे। तब उसने घोड़ी दे।

Scanned with CamScanner

पाबूजी दूल्हे बने हुए घोड़ी पर सवार थे। सभी को नेग दिया किन्तु देवल चारणी ने नेग नहीं लिया और आँसू बहाने लगी। तब उससे रोने का कारण पूछा। इस पर उसने कहा कि हे पाबूजी, आप सोढ़ो के अमरकोट जा रहे हो। सभी सरदार साथ जा रहे हैं। मेरी गायों की रक्षा का क्या प्रबंध किया है? उन्होंने विश्वास दिलाया कि बड़े भाई बूड़ोजी वाढ़ में ही रहेंगे। फिर भी कोई संकट हो तो संदेश भेज देना। मैं दौड़कर चला आऊंगा। तब चारणी ने नेग लेकर उन्हें विदा किया। काले नाग ने रास्ता काटा किन्तु पाबूजी ने नाग को दाहिनी ओर करके चल पड़े। आगे सिंहनी ने मार्ग रोका। शकुनशास्त्री ने इसे घोर अपशकुन मानते हुए बारात वापस मोड़ लेने को कहा तथा विवाह के लिये तलवार भेज देने को कहा, किन्तु उन्होंने इसे कायरता समझा। तब डामा ने अपने साहस से सिंहनी को मार भगाया। बारात को उचित स्थान पर ठहराया गया। केसरिया तम्बू में पाबूजी का डेरा था। सोढ़ो के नाई ने डामा के लिए अफीम का भण्डार खोल दिया। डामा अफीम का भण्डार चट कर दिया। सोढ़ो में खलबली मच गई। सोढ़ा राजपूत इस प्रकार शठौड़ों के साथ संबंध करके पश्चाताप कर रहे थे। उन्होंने पाबूजी के सामने भइवदौड़ का प्रस्ताव रखा। पाबूजी की घोड़ी ने सभी घोड़े को हरा दिया। पाबूजी की हेठी दिखाने के लिये गगनचुम्बी गढ़ के कंगूरे पर तोरण बांधा किन्तु पाबूजी की घोड़ी ने कहा कि - हे पाबू! यदि तू मेरी पीठ पर थाप मारे तो मैं चाद - सूरज पर स्थित तोरण को भी गिरवा दूँ। कृत्य करते = उसने उछाल भरी। गढ़ के कंगूरे पर केसर ने पाँव रखा और पाबूजी ने तोरण मारा।

पाबूजी की आरती की गई। जोशी ने वेदी रचाई। नाई ने हीरे की चौकी बिछाई। पाबूजी लग्न मण्डप में बैठे।

Scanned with CamScanner

सोढी, सहेलियाँ सहित मण्डप में बैठ गई। कन्यादान हुआ। पिता राजा ने नौ मन स्वर्ण, माँ ने सवा मन सोना, भाई भावज ने अन्न-धन, काका, ताऊ ने मोहरें दान की। पहले फेरे में दोनों का मन और दूसरे फेरे में आत्मा एक हो गयें। इतने में घोड़ी हिनहिनाई। डामा ने कहा कि - पाबूजी के दो फेरे बाकी है। तुम विघ्न मत डालो। तब घोड़ी ने कहा कि देवल-चारणी सोढा के दरवाजे पर करुण पुकार कर रही है क्योंकि उसकी गायो को जायल खींची ले जा रहा है। सभी बात पाबूजी को बतायें गई। उसी क्षण गठबंधन छोड़कर वे चलने लगे सोढी ने पूछा, "मैंने क्या अपराध किया है जो मुझे आधी व्याही आधी कुंवारी छोड़कर जा रहे हो? पाबूजी ने कहा, तुम्हारा या तुम्हारे घरवालों का कोई दोष नहीं है। मैं स्वयं दोषी हूँ। मैं देवल चारणी के गायों की रक्षार्थ हेतु वचनबद्ध हूँ। यदि मैं नहीं गया तो राठौड़ो पर कलंक लग जायेगा। पाबूजी ने कहा जीवित रहा तो मैं आ जाऊंगा अन्यथा पुत्र मेरे चिह्न ले आयेंगे। यह कहकर पाबूजी और उनके मित्र चांदा व डामा भी चले गए। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। चींची भागकर मामा के पास अटनेर गया। मामा ने उसे पहले धिक्कारा परन्तु बाद में भड़काने पर वह क्रोधित हो गया। उसने रामसिंह भाटी को डामा को मारने भेजा। तभी भाटियों ज्ञानसिंह को मार डाला। तभी भाटियों ने पाबूजी, चांदा, डामा को घेर लिया। डामा व चांदा सहित पाबूजी वीरगति को प्राप्त हुए। बूढ़ोजी भी युद्ध में मारे गये। उनकी गर्भवती पत्नी ने उदर चीर कर शिशु को निकालकर पती के साथ सती हो गई। उसका पालन नीनिहाल में हुआ। साथ ही सोढी भी सती हो गई। वह पुत्र नानडिया (ननिहाल में रहने वाला) कहलाया तथा उसी ने भाटी का सिर काटकर पिता व काका का प्रतिशोध लिया।

Scanned with CamScanner

बगड़ावत :- राजस्थान में प्रचलित लोकगाथाओं में बगड़ावत का विशिष्ट स्थान है। अजमेर के शासक बीसलदेव चौहान के शासनकाल में सुख चैन का राज्य था। एक बार नरभक्षी सिंह का आतंक बढ़ गया। तेजस्वी युवक हरिसिंह ने उस सिंह का शीश काट दिया। जब वह उसका कटा सिर लेकर आ रहा था, तो उसकी दृष्टि बाल विधवा लीला पर पड़ी। फलस्वरूप उसके आधान (गर्भ) रह गया। लोकप्रवाद फैल जाने से राजा ने लीला से पूछ हरिसिंह को उसे सौंप दिया। नौ माह के बाद उसके जो पुत्र हुआ, वह धड़ से मनुष्य तथा शीश से सिंह था। ऐसे विचित्र पुत्र को अशुभ मानकर उसे वन में त्याग दिया। वह वन में सिंहनी का स्तनपान कर जीवित रहा। एक दिन राजा ने उसे स्तनपान करते हुए देख लिया। तब राजा ने हरिसिंह को उसका पालन करने का आदेश दिया। उस बालक से एक बार बाग में खेलती कन्याओं ने पेड़ से झूला उतारने को कहा। तब बाघला ने कहा कि यदि वे उसके सात परिक्रमा चारों ओर कर ले तो वह झूला उतारेगा। उन कन्याओं ने शर्त स्वीकार कर ली। वर्षों बाद जब वे कन्याएं विवाह योग्य हुई और विवाह का मुहूर्त निकालने के लिए पंचांग देखा गया तो कोई मुहूर्त ही नहीं था। तब कन्याओं ने परिक्रमा की बात कही। तभी राजा ने बाघला को सभी 24 कन्याओं को ले जाने का आदेश दिया।

कालान्तर में इन्ही कन्याओं से तेजा, भोजो, नेवों, बाहो, मालो, पल्लो, कान्हड, बूदड, हालू, टीको, हमीर, हिमात, तिजक, होलो, ढोलो, रूपो, जोधू, जमरूप, सुजान, सांगड, धनो, राजू, खैनोह तथा नरसिंह उत्पन्न हुए। ये सभी 24 पुत्र बगड़ावत कहलाए। इनके गांव को गोठ कहा जाता था। इनका विवाह गूजर कन्याओं से हुआ। ये गायें चराते थे। एक दिन उन्होंने एक सुनहरी सींगों वाली गाय को अपनी गायों के झुण्ड में देखा जो संध्या होते ही हमेशा अदृश्य हो जाती थी। भोज ने एक दिन उसका पीछा किया।

Scanned with CamScanner

उसे योगी के आश्रम में खड़ा देखा। भोज ने योगी से चराई का पारिश्रमिक मांगा। योगी ने कहा मैं स्नान करके आ रहा हूँ। तब तक किसी वस्तु को मत छूना। भोज ने चाबियों को देखा तो उसने बंद कमरों (ओवरे) को खोल दिया। जहां अनेक विचित्र दृश्य दिखाई दिये। कहीं पर जयमंगला हाथी, बुमली घोड़ी, बिजली खड्ग, नरमुंड हंस थे। नरमुंडों ने कहा कि यह योगी तुम्हें भी नरमुंड बना देगा। इतने में योगी आ गया। उसने भोज को उबलते तेल भरे कड़ाह के चारों ओर चक्कर काटने के लिए कहा। मौका देखकर योगी को ही भरे तेल में डाल दिया जिससे पूरा शरीर उसका सोने का हो गया। तब भोज ने साक्षात शिव को देखा। भोज के बुद्धि-चातुर्य से प्रसन्न होकर शिव ने उसे 'बारह बरस की काया' तथा 'बारह बरस की माया' को भोगने का वर दिया। साथ ही जयमंगला हाथी, बुमली घोड़ी व बिजली खड्ग भी दिए। भोज श्रीसम्पन्न घर लौटा।

सभी बगड़ावत धनवान हो गये। उन्होंने अरबी घोड़े खरीदे। विलासिता, आमोद-प्रमोद में धन का व्यय होने लगा। एक दिन अश्वों पर बगड़ावत घूमते हुए राण पहुँचे। वहाँ माली ने दरवाजा खोलने के लिए मोहरें तो ले ली किन्तु दरवाजा नहीं खोला। क्रुद्ध बगड़ावतों ने राजा के बाग को तहस-नहस कर दिया। इससे राणाजी ने अपने भाई नीमाजी को युद्ध करने को भेजा। मार्ग में सूअर मारने की घटना से प्रभावित होकर नीमाजी ने नेवाजी से मित्रता कर ली। नेवाजी ने मदिरा का प्रबंध करने के लिए पातू कलाली से बात करनी चाही लेकिन पातू कलाली के कांच का आंगन नेवाजी के घोड़े के कारण टूट गया जिससे वह रुष्ट हो गई। बगड़ावतों ने अपना हार उसे दिया। जौहरियों ने उसे असाधारण कहा। तब कलाली ने कहा यदि आपने सम्पूर्ण शराब नहीं पी तो यह सब कुछ छीन लेगी, अन्यथा एक भी पैसा नहीं लेगी।

पातु ने बगड़ावतों को भाई बना दिया। भोजा ने मदिरा पान किया। उधर राणा ने सरदारों के साथ बगड़ावतों की महफिल में शराब पी। लाल शराब के कुछ छींटे धरती में रिस रिस कर शेषनाग के फन तक पहुँचे। शेषनाग बहुत रुष्ट हुआ। भगवान विष्णु से शेषनाग ने शिकायत की तो भगवान ने शिव को उनकी परीक्षा लेने के लिए भेजा। शिवजी कोढ़ी रूप बनाकर वहाँ गए। नेवाजी ने उन्हें पहचान लिया। सभी भाइयों ने गंगाजल से उनको नहलाया। फिर उनके रक्तपीव मिश्रित जल को वे पी गए जिससे शिवजी बहुत प्रसन्न हुए।

श्रीविष्णु ने भोज की स्त्री साढूजी को छलने का निश्चय किया। वे भिक्षुक बनकर वहाँ पहुँचे। भिक्षा देने के लिए स्वयं आने को कहा। उस समय वह नग्नावस्था में थी। वह जैसे भिक्षा लेकर आयी तो प्रभु ने मुँह फेर लिया। तब रानी ने कहा कि पुत्री को पिता से लज्जा करने की आवश्यकता नहीं है। भगवान प्रसन्न हुए। धर्मभाव के कारण रानी के केशों से सारा शरीर ढक गया। विष्णु ने वरदान मांगने को कहा। उसने पुत्र रूप में भगवान को चाहा। विष्णु ने 'देवनारायण' के रूप में अवतार लेकर बगड़ावतों का नाश करने का संकल्प लिया।

उधर शेषनाग ने चामुण्डा से प्रार्थना की तो उन्होंने ईडरकोट के राजा के यहाँ जन्म लिया। राजा ने पुत्री का नाम जैमती रखा। उसके विवाह के लिए उपयुक्त वर के लिए ब्राह्मण को बुलाया गया। जिसके पास बुगली घोड़ी तथा पच मुंगला हाथी होने चाहिए। जैमती के विवाह का तिलक राणाजी को दिया। हाथी पर सवार दूल्हा राणा ने तोरण मारना चाहा तो चामुण्डा ने सिंहनी बनकर हाथी को डरा दिया। जिससे विचलित हाथी से वह गिर गया। इस अपमानित स्थिति से बचने के लिए भोज ने तोरण मार दिया। जैमती ने भोज की तलवार के साथ फेरे लिये और दिखावटी रूप में राणा से

Scanned with CamScanner

विवाह कर लिया। बगड़ावतों ने जैमती को छः माह बाद आकर ले जाने की प्रतिज्ञा की। 3 माह में जैमती ने राणाजी से नवखण्ड महल बनवाने को कहा। महल बनने पर जैमती ने उसे एक किलकारी मार कर ढहा दिया। फिर से महल बनाया। हीरा को सेज सजाने के लिए भेजा। क्रुद्ध रानी ने राणा को कुत्ता व हीरा को बिल्ली बनाकर लड़वा दिया। प्रातः काल वे फिर से मनुष्य बना दिये गये। राणा ने नेमाजी को जैमती के सिंह होने की बात कही। जैमती ने नेमाजी को समझा दिया। एक वर्ष व्यतीत होने पर भी बगड़ावत नहीं आये। तब जैमती ने हीरा को स्वर्ण चिड़ी बनाकर भेजा। बगड़ावत जैमती के निर्देशानुसार राणा के बाग में पहुंच गये। जैमती ने हीरा के साथ राणाजी को संदेश भिजवाया कि वह बीमार है. अतएव राणा को चाहिए कि बारह मण का सुमर तथा बारह मण के बांकले बनाकर देवी को चढ़ा दें। राणा तो शिकार के लिए गये और उधर जैमती हीरा को लेकर बगड़ावतों के पास चल दी। शिकार से लौटने पर राणा को जैमती के अपहरण की सूचना दी। राणा ने बगड़ावतों को जैमती लौटाने का संकेत दिया। उनके सामने संधि का प्रस्ताव रखा, लेकिन बगड़ावत नहीं माने। जैमती ने माया से एक-२ बगड़ावत को एक २ कर युद्ध करने के लिए भेजा। नेवाजी गुरु रूपनाथ की कृपा से 6 माह तक संघर्ष करते रहे। तब देवी ने गुरु की 'धूणी' से पवित्र वस्तुओं को गायब कर दिया। तब नेवाजी की पत्नी नेतु ने नेवाजी के जीव को पायल में रखकर उसे घोड़े के पैरों से बांध दिया। तब देवी ने अपने चक्र से नेवाजी का सिर काट डाला। उनके सिर के स्थान पर कमल व वक्ष पर आँखे आ गई उनका धड़ 6 माह तक लड़ता रहा। गर्भवती नेतु ने पेट से शिशु निकालकर गुरु रूपनाथ को सौंप और स्वयं सती हो गई सती नेतु ने रानी को कोढ़िन का श्राप दिया तथा कमल से

Scanned with CamScanner

देवनारायण के अवतरण की भविष्यवाणी की। कगड़ावतों ने वीर गति प्राप्त की। भोजु की पत्नी को देवी ने सती होने से रोक दिया। किन्तु उस कमल में से भ्रमर रूप में प्रकट हुए और भोज की पत्नी साढू की गोद में खेलने लगे। तब राणा के गढ़ के कंगूरे व अटारियाँ हिलने लगी। राणा को ज्ञात हुआ कि यह शिशु ही बगड़ावतों के अपमान का बदला लेगा। राणा ने उसे मारने के लिए भेजा। उन्होंने देखा कि उस शिशु को सर्पों ने घेर रखा है। उस पर शेषनाग के फन की छाया की हुई है। बावन भैरव प्रहरी बने हुए हैं। हत्यारों ने क्षमा याचना की और लौट आये। बड़े होकर देवनारायण ने युद्ध में राणा को हरा दिया। इस प्रकार बदला लेने के बाद वे अन्तर्धान हो गए। माता साढू को वचन दिया कि जब भी वह गोबर की गुंहली देकर याद करेगी, वे उपस्थित हो जायेंगे।

सारांश: लोकगाथाओं में राजस्थानी समाज, संस्कृति, धर्म और दर्शन है। इसमें लोक विश्वास, लोक संगीत तथा लोक चेतना की त्रिवेणी है। इसके रचनाकार का कोई व्यक्ति विशेष सिरजनहार नहीं है यह किसी जाति या सम्प्रदाय की धरोहर नहीं है। यह सबका आख्यान है तथा सब उसके हैं। लोक वार्ता में वर्णित कथानक अभिप्रायों से इन लोकगाथाओं का सौंदर्य बढ़ता है। कथानक रूढ़ियों से लोकगाथा की सम्प्रेषणीयता में विस्तार होता है। गीत, संगीत और नृत्य के साथ अभिनेयता के साथ लोकगाथाओं की प्रस्तुती जीवन्त बन कर ही प्रस्तुत होती है।